प्रत्यक्ष प्रमाण

न्याय दर्शन में प्रत्यक्ष पहला प्रमाण है। नया दर्शन प्रत्यक्ष का प्रयोग प्रमाण तथा प्रमाण दोनों ही अर्थों में हुआ है।इन्द्रिय और अर्थ के सन्निकर्ष से जन्य तथा अव्यभिचारी अर्थात् यथार्थ ज्ञान प्रत्यक्ष कहलाता है।

प्रत्यक्ष ज्ञान संदेह रहित है।यह यथार्थ और निश्चित होता है। प्रत्यक्ष ज्ञान को किसी अन्य ज्ञान के द्वारा प्रमाणित करने की आवश्यकता नहीं होती है। बल्कि अन्य सभी ज्ञान जैसे अनुमान शब्द उपमान इत्यादि उपमान इत्यादि शब्द उपमान इत्यादि उपमान इत्यादि किसी न किसी रूप में प्रत्यक्ष पर आश्रित है।

प्रत्यक्ष दो शब्दों के योग से बना है 'प्रति' और 'अक्ष'। प्रति का अर्थ होता है सामने है सामने और अक्ष का अर्थ होता है आंख। इस तरह प्रत्यक्ष का अर्थ है जो आंख के सामने हो किंतु यह इसका संकीर्ण अर्थ अर्थ है । आंख शब्द का प्रयोग यहां अन्य ज्ञानेन्द्रियों के प्रतीक के रूप में हुआ है। इस दृष्टि से वह ज्ञान जो ज्ञानेन्द्रियों के माध्यम से प्राप्त होता है वही प्रत्यक्ष है। न्याय दर्शन में प्रत्यक्ष को परिभाषित करते हुए कहा गया है "इन्द्रियार्थसन्निकर्षजन्य ज्ञानम् प्रत्यक्षम्" अर्थात इंद्रिय और विषय के सन्निकर्ष से उत्पन्न ज्ञान को प्रत्यक्ष कहा जाता है। प्रत्यक्ष प्रमा में इन्द्रियार्थ सन्निकर्ष को ही करण माना गया है। इन्द्रियार्थ सन्निकर्ष दो प्रकार का होता है - लौकिक और अलौकिक।

लौकिक सन्निकर्ष के छ: भेद है - संयोग, संयुक्त समवाय, संयुक्त समवेत समवाय, समवेत समवाय और विशेषण विशेष्य भाव ।

लौकिक प्रत्यक्ष

जब इंद्रिय का वस्तु के साथ साधारण संपर्क होता है तब उस प्रत्यक्ष को लौकिक प्रत्यक्ष प्रत्यक्ष लौकिक प्रत्यक्ष प्रत्यक्ष कहते हैं लौकिक प्रत्यक्ष के दो भेद हैं बाह्य प्रत्यक्ष और मानस प्रत्यक्ष ।

जब बाह्य इंद्रियों का वस्तु के साथ संपर्क होता है तब उस संपर्क से जो प्रत्यक्ष होता है उसे बाह्य प्रत्यक्ष कहते हैं। आंख, कान, नाक, जीभ और त्वचा ये पांच बाह्य ज्ञानेंद्रियां है। इनसे पांच बाह्य प्रत्यक्ष होते हैं। चक्षु या आंख से से जो ज्ञान प्राप्त होता है उसे चाक्षुस प्रत्यक्ष कहते हैं, कान से प्राप्त ज्ञान को स्रोत प्रत्यक्ष, इसी तरह नाक से घ्राणज प्रत्यक्ष जीभ से रासन प्रत्यक्ष और त्वचा से स्पर्श प्रत्यक्ष होता है। मन एक आंतरिक इंद्रिय है उसके द्वारा जो प्रत्यक्ष का ज्ञान होता है उसे मानस प्रत्यक्ष कहते हैं।

अलौकिक प्रत्यक्ष-

इंद्रियों का विषयों के साथ जो असाधारण संबंध होता है उसे अलौकिक प्रत्यक्ष कहा जाता है। इस प्रत्यक्ष में इंद्रियों का विषयों के साथ सन्निकर्ष अलौकिक होता है। अलौकिक प्रत्यक्ष तीन प्रकार का होता है- 1. सामान्य लक्षण, 2. ज्ञान लक्षण 3.योगज।

1. सामान्य लक्षण प्रत्यक्ष - किसी व्यक्ति के प्रत्यक्ष से जब हमें उसकी जाति का प्रत्यक्ष भी होता है तो उसे सामान्य लक्षण प्रत्यक्ष कहते हैं। हम राम, मोहन, श्याम आदि विभिन्न व्यक्तियों को देखते हैं किंतु हमें उनके ज्ञान के साथ-साथ उनके मनुष्य होने का भी ज्ञान मिलता है। ऐसा इसलिए होता है क्योंकि जाति व्यक्ति में ही समवेत है। जब हम व्यक्ति को देखते हैं तो उनमें निहित सामान्य का बोध भी हमें होता है इसीलिए इस प्रत्यक्ष को सामान्य लक्षण प्रत्यक्ष कहते हैं।

2. ज्ञान लक्षण प्रत्यक्ष- हमारी ज्ञानेंद्रियों के के अपने अपने विषय होते हैं जैसे आंख से रूप का कांस्य शब्द का नाक से गर्ल्स का त्वचा से स्पर्श का ज्ञान हमें होता है। एक इंद्रिय से साधारण दूसरी इंद्रिय के विषय का ज्ञान संभव नहीं होता। ज्ञान लक्षण प्रत्यक्ष अलौकिक अप्रत्यक्ष का वह भेद का वह भेद है जिसके द्वारा इंद्रिय अपने अपने विषय से भिन्न से भिन्न विषय से भिन्न से भिन्न अपने विषय से भिन्न से भिन्न विषय से भिन्न विषय का ज्ञान भी ग्रहण करती है। जैसे हरी घास को देखकर उसके मुलायम होने का ज्ञान। किसी वस्तु के ठोस या मुलायम होने का ज्ञान हमें त्वचा नामक ज्ञानेन्द्रिय से प्राप्त होता है आंख के द्वारा इस ज्ञान का कारण पूर्वानुभूति है। यह ज्ञान पहले के प्राप्त ज्ञान पर आधारित रहने के कारण ज्ञान लक्षण प्रत्यक्ष कहा जाता है।

3. योगज- हमारी इंद्रियों की शक्ति सीमित है शक्ति सीमित है इन इंद्रियों से सभी परोक्ष और सूक्ष्म विषयों का ज्ञान संभव नहीं है। कुछ असाधारण व्यक्ति भूत, वर्तमान, भविष्य, सूक्ष्म, दूरस्थ, निकटष्ट आदि सभी विषयों का ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं यही

योगज प्रत्यक्ष है। क्या ज्ञान प्रायः योगियों को होता है जिन्होंने योगाभ्यास के द्वारा ऐसी शक्ति प्राप्त कर ली होती है।यह ज्ञान दो प्रकार का होता है- युक्त और युंजान। जिस योगी ने पूर्णता प्राप्त कर ली है उसे युक्त कहते हैं और जो अभी अभ्यासरत है, पूर्णता की प्राप्ति अभी नहीं हुई है, उसे यूंजान कहते हैं।